परी देश की सैर

वर्ष १२] नवम्बर १९२८—कार्तिक १९८५ [संख्या ११

विद्वान बनो, मज़बूत बनो।

विद्वान बनो, मज़बूत बनो।
माता के सच्चे पूत बनो॥
विद्या पढ़ कर विद्वान बनो,
कसरत करके बलवान बनो,
गुण संचय कर गुणवान बनो,
मा की सची सन्तान बनो॥
तुम स्वतंत्रता के दूत बनो।
विद्वान बनो, मज़बूत बनो॥

श्रीमनोरञ्जन एम० ए०

स्वर्गीय लाला लाजपतराय

प्यारे बालको, तुमने लाला लाजपतराय का नाम ज़रूर सुना होगा और तुममें से बहुतों ने उनको देखा भी होगा। हमारे देश में शायद ही कोई ऐसी जगह हो जहाँ वे न गये हों और जहाँ उनकी अच्छी बातें सुनने के लिए हज़ारों लोग न जमा हुए हों। वे हमारे देश के एक बहुत बड़े नेता थे। यह लिखते हुए हमें बहुत दुःख होता है, कि गत १७ नवम्बर को साढ़े सात बजे सवेरे लाहौर में उनकी मौत हो गई। अब वे हमारे बीच में नहीं हैं। हमारे देश में क्या छोटे क्या बड़े, क्या हिन्दू क्या मुसलमान सभी उनके वियोग से दुःखी हो रहे हैं।

लाला लाजपतराय का जन्म १८६५ ईसवी में पञ्जाब के एक गाँव में हुआ था। इस गाँव का नाम जगराँव है। लालाजी का जन्म एक ग़रीब घर में हुआ था। परन्तु उनके पिता लाला राधाकिशन एक बड़े देशभक्त थे और आर्य्य-समाज के सेवक थे। लालाजी की माता भी बड़ी दयावती देवी थीं। लालाजी अपने माता-पिता के बड़े भक्त थे। भारतवर्ष के नेता बन जाने पर जब लोग उनसे पूछते थे कि आप इतने बड़े नेता कैसे बन गये तो वे कहा करते थे—“मैं जो कुछ हूँ वह मुझे मेरे माँ-बाप ने और आर्य्य-समाज ने बनाया है।”

पढ़ने-लिखने में वे बड़े मिहनती थे। ख़ूब दिल लगा कर पढ़ते थे। १८८५ ईसवी में उन्होंने वकालत का इम्तहान पास किया था। उस इम्तहान में जितने लड़के पास हुए थे, उन सबों में लालाजी का नम्बर दूसरा था। बड़े होने पर उन्होंने वकालत शुरू की। परन्तु अपने वकालत की वे उतनी परवा नहीं करते थे जितनी देश को और आर्य्य-समाज की सेवा की। वे जो कुछ भी वकालत से पैदा करते थे, सब देश के काम में लगा देते थे।

स्वर्गीय लाला लाजपतराय

बालकों से और विद्यार्थियों से उन्हें बड़ा प्रेम था। वे रात-दिन यही सोचा करते थे कि हमारे देश के विद्यार्थियों की हालत अच्छी होनी चाहिए, उन्हें अच्छी शिक्षा मिलनी चाहिए। वे चाहते थे कि हमारे देश के विद्यार्थी हिन्दी और संस्कृत पढ़ें। लाहौर में इस समय आर्य्य-समाज का एक बड़ा कालेज है। इसको जन्म देनेवालों में लालाजी भी एक थे। पंजाब में हिन्दी की पढ़ाई पहले-पहल इसी कालिज में शुरू हुई थी।

हमारा देश आज-कल बड़ा ग़रीब हो गया है। इसकी लालाजी को बड़ी चिन्ता थी। ग़रीबी दूर करने के उपाय वे हमेशा सोचते रहते थे। १८९७ ईसवी में हमारे देश में बहुत बड़ा अकाल पड़ा था। हज़ारों आदमी भूख से मरने लगे थे और हज़ारों बच्चे बिना मा-बाप के हो गये थे। लालाजी ने आर्यसमाज की मदद से इस अकाल के समय में भूख से मरते लोगों को बचाने के लिए बड़ी कोशिश की और बच्चों के लिए अनाथालय खुलवाये। आज देश में चारों तरफ़ आर्यसमाज के जो अनाथालय देख पड़ते हैं उन्हें लालाजी के ही परिश्रम का फल समझना चाहिए।

अपने प्यारे देश के लिए वे कई बार जेलख़ाने गये, देश-विदेश मारे-मारे फिरे। फिर भी उन्होंने कभी हार नहीं मानी। वे अपनी धुन के बड़े पक्के थे। जिस काम में लगते थे उसमें जी-जान से लगते थे। हिन्दुओं में चमारों और भङ्गियों आदि की दशा बड़ी ख़राब है। लालाजी कहा करते थे—"चमार और भङ्गी आदि भी हमारे भाई हैं, हमें चाहिए कि हम उनसे दूर न भागें, उन्हें प्यार करें; जैसे हम पढ़ते-लिखते हैं वैसे ही उनकी भी लिखने-पढ़ने और भले आदमी बनने में मदद करें।" इस काम के लिए उन्होंने लाखों रुपये स्वयं अपनी जेब से निकाल कर दिये थे।

अब वे बुड्ढे हो गये थे। उनके शरीर में बिलकुल बल नहीं था। फिर भी वे देश-सेवा में लगे रहते थे। सेवा ही करते करते उन्होंने प्राण छोड़ा। उनकी मृत्यु पर शोक प्रकट करते हुए पंडित मोतीलाल नेहरू ने ठीक ही कहा था कि—"अपने घर के लालाजी तो सभी होते हैं परन्तु लाला लाजपतराय सारे हिन्दुस्तान के लालाजी थे।"

छोटे बच्चे क्या सोचते हैं ?

(१)

साढ़े तीन वर्ष की एक छोटी लड़की ने अपनी मा से कहा—"मा, मेरे सिर पर एक बड़ा सा पत्थर रख दे क्योंकि मैं मरना नहीं चाहती।"

मा ने पूछा—"भारी पत्थर तुझे मरने से कैसे बचायेगा ?" लड़की बोली—"बोझ से मैं दबी रहूँगी, बढ़ूँगी नहीं और बिना बढ़े न बूढ़ी होऊँगी न मरूँगी।"

(२)

उसी लड़की ने एक दिन बिछौने पर पड़े पड़े अपनी आँखें बन्द कर लीं और कहा—"मा, अब तुम मुझे नहीं देख सकती हो ?"

मा ने जवाब दिया—"अरी भोली! मैं तो तुझे देख रही हूँ पर तू ही मुझे नहीं देख सकती।"

इस पर लड़की बोल उठी—"नहीं मा, तुम्हें मेरा शरीर दिखाई पड़ता होगा मुझे तो अब तुम देख ही नहीं सकती हो।"

(३)

चार वर्ष का एक लड़का एक दिन चाकू से खेल रहा था। मा ने कहा—"लाल, चाकू से मत खेलो नहीं तो तुम्हारी अँगुलियाँ कट जायँगी और

फिर उनकी जगह पर नई अँगुलियाँ नहीं निकलेंगी।" थोड़ी देर चुप रह कर लड़के ने जवाब दिया—"एक दाँत उखड़ने पर दूसरा दाँत तो निकल आता
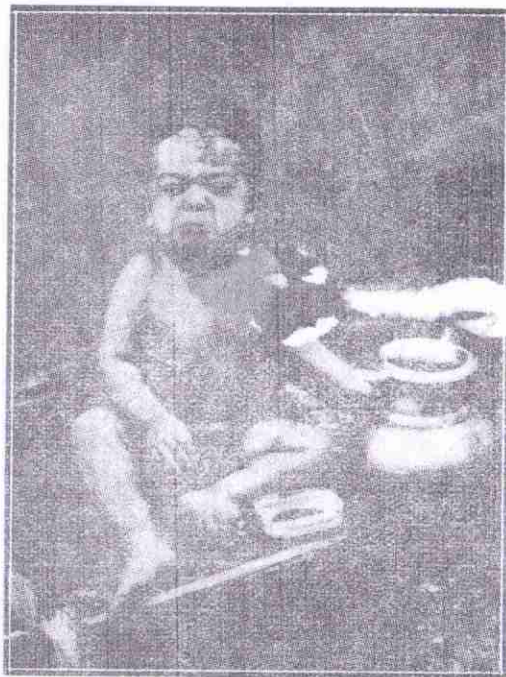
आप सोच रहे हैं कि शायद इस प्रकार मुँह बना लेने से आदमी नहाने से बच जाता है।

गुड़िया मेरी भोली भाली। करती है घर की रखवाली॥

अरे भाई उठते क्यों नहीं हो?

है। एक अँगुली कटने पर दूसरी क्यों न निकलेगी? मैं कहूँगा भगवान, अँगुली कट गई है ज़रा इसे ठीक कर दो। बस अँगुली ठीक हो जायगी।"

(४)

एक दूसरा बालक एक दिन मेला जा रहा था। रास्ते में कुछ कंकड़ पड़े देख कर उसने सोचा—"आह! बेचारे यहीं पड़े हैं, इनमें से दो चार को मैं ज़रूर मेला दिखलाऊँगा। बस कुछ कंकड़ों को हाथ में लिये वह तमाम मेले में घूमता रहा और जब लौटने लगा तो उन्हें एक ऊँची जगह पर रख कर बोला—"लो यहाँ से तुम ख़ूब अच्छी तरह देख सकते हो, अब मैं तुमसे अलग होता हूँ, नमस्कार!"

चल चल घोड़े सरपट चाल। तुझे खिलाऊँ रोटी दाल॥

(५)

गला फाड़ कर चिल्लाते हैं। तब जो चाहें पा जाते हैं॥

एक नन्हे महाशय बातचीत नहीं कर सकते थे। चल फिर भी नहीं सकते थे। एक दिन शाम को उन्हें एक चिराग़ दिखलाया गया। उसे देखकर

आप .खूब .खुश हुए और लगे हाथ-पैर झटकने तथा मुँह बाने। मा ने बचाया बहुत पर हाथ चिराग़ पर जा ही पड़ा। चिराग़ बुझ गया, अँधेरा हो गया और आप ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगे। शायद आपने यह समझा कि चिराग़ मार कर भग गया। थोड़ी देर में चिराग़ फिर जलाया गया। घर के सब लड़के इकट्ठे हुए, चिराग़ के पास दीवाल पीटी गई और सब लड़कों ने चिल्लाकर कहा—"मारो दुश्मन को।" थोड़ी देर में आप भी शान्त हुए और चिराग़ की तरफ़ इशारा करके कहने लगे—"तुटमन"। अब अगर उन्हें लोग चिराग़ दिखाते हैं और पूछते हैं कि क्या है तो फ़ौरन जवाब देते हैं—"तुटमन।"

खरमस्त

——

गङ्गा

ऐ बे-मिसाल नदी गङ्गा है नाम तेरा,
कहते हैं स्वर्ग जिसको वह है मुक़ाम तेरा।
ऋषियों ने मुद्दतों तप तेरे लिए किये हैं,
तब तूने आके अपने दर्शन हमें दिये हैं।
चरणों के तेरे लायक़ कब था जहाँ हमारा,
शिवजी ने आसमाँ से सर पर तुझे उतारा।
उँचाइयों से चल कर जाती है नीचे नीचे,
तूने पहाड़ सींचे मैदान तूने सींचे।
उत्तर से आ रही है दक्खिन को जा रही है,
फ़ैयाज़ियों का अपनी दरिया बहा रही है।
मालूम है यह किसको तू बह रही है कब से ?
उस दिन से बह रही है दुनिया बनी है जब से।
दिन-रात तू रवाँ है शामो सहर रवाँ है,
हिन्दोस्तान तेरी बरकत से गुलसिताँ है।

सबज़ा तेरे किनारे क्या लहलहा रहा है,
क्या फूल खिल रहे हैं क्या लुत्फ़ आ रहा है।
मीठा है तेरा पानी है पाक तेरा पानी,
कहते हैं जिसको अमृत विद्वान और ज्ञानी।
है तेज़ तेरी धारा चंचल हैं तेरी लहरें,
चलती हैं तुझसे नावें जारी हैं तुझसे नहरें।

तू जिस तरफ़ गई है खेती हरी हुई है,
भारत की 'मोतियों' से गोदी भरी हुई है।
ऋषियों ने तप किये हैं आकर तेरे कनारे,
वैकुण्ठ को गये हैं ज्ञानी तेरे सहारे।
जमघट है तेरे तट पर दास और दासियों का,
बेड़ा है पार तुझसे भारत-निवासियों का॥

श्याममोहनलाल 'जिगर', बी० ए०

——

प्रेमा का सपना

प्रेमा कहानी सुनते सुनते नानी की गोद में सो गई। आँख लगते ही उसने देखा कि वह अपने घर से बाहर, नदी के पार—दूर, बहुत दूर, अकेली चली गई है। वहाँ खूब हरी हरी घास है, ऊँचे ऊँचे पेड़ हैं। दूर तक इधर-उधर कोई मकान नहीं है। पहले वह कुछ डरी फिर सँभल गई। उसे याद आगया कि डरना अच्छे लड़कों का स्वभाव नहीं है। थोड़ा और चलने पर उसने देखा कि एक ऊँचा सा टीला, छोटे हाथी के बराबर, हरी हरी घास से ढका हुआ खड़ा है। प्रेमा को हाथी पर चढ़ना बड़ा अच्छा मालूम होता था। वह दो-तीन बार अपने दादा की बारात में हाथी पर चढ़ चुकी थी। इसलिए टीले को देखते ही वह बड़ी बड़ी घास का सहारा लेकर चढ़ गई। उस पर खड़ी होकर उसने पीछे को देखा, तो उसे अपने घर की छत दिखाई पड़ी। कुछ देर तक वह अपने घर को ही देखती रही। मन में सोचती जाती थी कि अगर यह टीला घर के पास चलता तो अच्छा होता!

यह सोचते ही उसे ऐसा जान पड़ने लगा जैसे वह टीला हिलता हो। उसने इधर-उधर देखा। टीला सच-मुच हिल रहा था। वह झपट कर उतरने चली, पर एक क़दम जाकर पीछे लौटी और डर कर बैठ गई। वह टीला ज़मीन से बहुत ऊँचा उठ चुका था और उड़ा जा रहा था। उसने एक बार फिर उठ कर देखा कि वह भूल तो नहीं रही है। इस बार उसे और भी अचम्भा हुआ। अब टीला उड़ता हुआ, उसके मकान के पास आगया था—लेकिन था बहुत उँचाई पर। इतने ऊँचे पर कि यदि प्रेमा कूदती तो चूर चूर हो जाती। लाचार होकर वह चुपचाप खड़ी रही। उसने देखा कि नदी निकल गई और टीला उसकी छत पर आगया—आँगन के ऊपर पहुँच गया।

उसकी माता नहा कर धूप में बाल सुखा रही थी, नानी चारपाई पर पड़ी ऊपर को देख रही थी। प्रेमा ने ज़ोर से चिल्ला कर उन्हें पुकारा। लेकिन किसी ने आवाज़ न सुनी और न उसकी ओर देखा ही। दुबारा जब उसने फिर चिल्लाने को मुँह खोला, तो टीला उड़ कर दूना ऊँचा होगया था। प्रेमा ने समझ लिया कि अब मा से, नानी से शायद ही भेंट हो। वह रोने लगी। उसी समय टीले के भीतर खटपट की आवाज़ हुई। प्रेमा को ऐसा जान पड़ा, जैसे मा आलमारी खोल रही हो। वह इस खटपट की आवाज़ के बारे में कुछ सोच ही रही थी कि उसे थाली में मिठाई और गिलास में जल रक्खा मिला। थाली में एक काग़ज़ भी रक्खा था। प्रेमा ने पहले उस काग़ज़ को उठा कर खोला। उसमें बड़े अच्छे साफ़ अक्षरों में लिखा था—"प्रेमा, तुम्हें भूख लगी होगी, लो यह गुलाबजामुन खा लो।"

प्रेमा की आँखों में अब भी आँसू भरे हुए थे, लेकिन फिर भी वह अपनी हँसी न रोक सकी। हँस कर दुबारा काग़ज़ पढ़ने लगी, तो और भी ताज्जुब में आगई। तश्तरी में दूसरा काग़ज़ न जाने कहाँ से आगया। उसमें लिखा था—देखो! बहुत न हँसो। पहले तश्तरी की सफ़ाई कर दो।

प्रेमा खिलखिला कर बड़े ज़ोर से हँस पड़ी। उसके पीछे से किसी ने पुकार कहा—हैं, हैं, इतनी हँसी—यह क्या?

उसने मुँह घुमा कर देखा। आगे तश्तरी में से आवाज़ निकली—हमें, खाओ। देर न करो।

उसने मिठाई की ओर देखा, तो गिलास के नीचे एक काग़ज़ दबा हुआ था। उसमें लिखा था—हमें पियो, डरो नहीं।

प्रेमा यह हाल देख कर चकित होगई। उसने फिर इधर-उधर नहीं देखा। नीचे का भी ख़याल नहीं किया, और टीले पर से धड़ाम से कूद पड़ी।

लेकिन सौभाग्य से किसी ने दौड़ कर उसकी दोनों बाँहें पकड़ लीं और कहा—वाह, यह क्या ? बिना खाये-पिये नहीं जा सकतीं।

प्रेमा ने डर से आँखें बन्द कर लीं, पर उसे मालूम हुआ कि वह उठा कर फिर टीले पर बिठाल दी गई। तुरन्त ही उसके पैर के पास 'चीं, चीं' की ऐसी आवाज़ हुई कि वह बरबस आँखें खोलने को तैयार होगई। अब उसने देखा कि ऊँची से ऊँची जो चिड़ियाँ उड़ा करती हैं उनसे वह न जाने कितनी दूर है। उसका ध्यान बराबर अपने आस-पास लगा रहा कि भला वहाँ उस टीले पर है कौन ? पर पता न चला। उसे बड़ी ज़ोर की भूख लग रही थी। सामने ताज़ी-ताज़ी, रस में भीगी हुई गुलाबजामनें रक्खी थीं। प्रेमा के मुँह से लार टपक पड़ी। उसने एक बार फिर अपने चारों ओर देखा। वहाँ कोई न था। उसने एक गुलाबजामन उठा कर मुँह में रक्खी, तो अखरोट का-सा तड़ाका हुआ। भूखी प्रेमा इन धोखेवाली गुलाबजामनों पर खीझ उठी। उसी समय किसी ने खिलखिला कर कहा—हा, हा—हा ! पगली लड़की।

प्रेमा ने यह सुन कर तश्तरी को उठा कर हँसनेवाले की ओर ग़ुस्से में भर खींच के मारा कि उसकी आँख खुल गई। उसने देखा नानी की छाती में उसका हाथ लगा। न कहीं टीला है, न कोई। वह अपनी नानी की गोद में अँगीठी के सामने पड़ी हुई थी। नानी ने उसके माथे पर हाथ फेर कर पूछा—प्रेमा ! बेटी, कहो चौंक पड़ीं क्या ?

प्रेमा ने धीरे से कहा—नहीं तो, और अपने सपने की बातों को सोचने लगी।

शम्भूदयाल सक्सेना

——
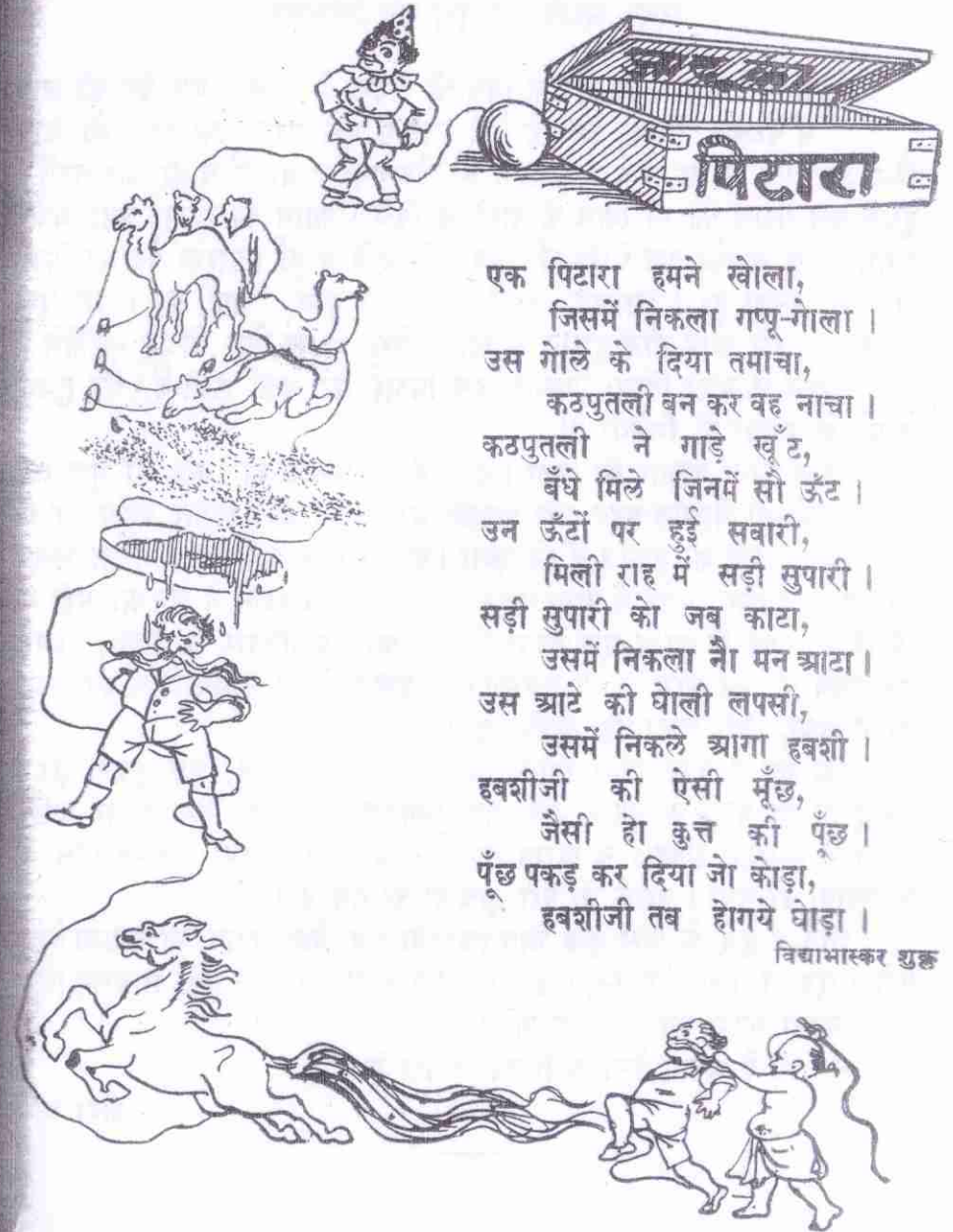
एक पिटारा हमने खोला,
जिसमें निकला गप्पू-गोला।
उस गोले के दिया तमाचा,
कठपुतली बन कर वह नाचा।
कठपुतली ने गाड़े खूँट,
बँधे मिले जिनमें सौ ऊँट।
उन ऊँटों पर हुई सवारी,
मिली राह में सड़ी सुपारी।
सड़ी सुपारी को जब काटा,
उसमें निकला नौ मन आटा।
उस आटे की घोली लपसी,
उसमें निकले आगा हबशी।
हबशीजी की ऐसी मूँछ,
जैसी हो कुत्ते की पूँछ।
पूँछ पकड़ कर दिया जो कोड़ा,
हबशीजी तब होगये घोड़ा।

विद्याभास्कर शुक्ल

एक भोले पठान का क़िस्सा

एक दिन कुछ पाठशाला के विद्यार्थी सड़क के किनारे एक पेड़ की छाया में बैठकर मिठाई खा रहे थे। इतने में एक पठान उस तरफ़ को आया और उसी पेड़ की छाया में एक तरफ़ को बैठ गया। लड़कों ने दो चार बर्फ़ी के टुकड़े उस पठान को भी खाने के वास्ते दे दिये। पठान को मिठाई बड़ी अच्छी लगी, किन्तु उसको उस थोड़ी सी मिठाई से तृप्ति न हुई। उसको पेट भर मिठाई खाने की इच्छा हुई। इसलिए उसने लड़कों से पूछा, "भाई, यह मिठाई बहुत अच्छी है। इसे आप कौन दुकान से लाये? ऐसी ही हम और मिठाई ख़रीदेंगे।"

लड़कों ने उत्तर दिया, "पठान, इस मिठाई को बर्फ़ी कहते हैं। यह तुमको सामने के बाज़ार में मिलेगी।"

पठान तुरन्त बाज़ार को चला। मार्ग में वह मिठाई का नाम तो भूल गया किन्तु बर्फ़ी की चैाकोन सूरत उसे अच्छी तरह याद रही। बाज़ार पहुँच कर वह इधर-उधर मिठाई की दुकान ढूँढ़ने लगा। एक दूकान में कपड़ा धोने का साबुन छोटे छोटे चैाकोर टुकड़ों में सजा कर रक्खा हुआ था। पठान ने समझा यही वह मिठाई है। जेब से तुरन्त एक रुपया निकाल कर दुकानदार से बोला, "हमको एक रुपये की यह चीज़ दो।" दुकानदार ने एक रुपये का साबुन तोल कर पठान को दे दिया, जिसे लेकर वह .खुशी .खुशी चला गया।

एक कुएँ के पास पठान अपनी मिठाई खाने बैठा। जो एक टुकड़ा मुँह में डाला तो वह बर्फ़ी के समान मीठा नहीं निकला और मुँह फेन से भर गया। पठान ने समझा, हलवाई ने ख़राब मिठाई दे दी—ठग लिया। परन्तु तिस पर भी खाता ही गया। उसके तो पैसे ख़र्च हो ही गये थे।

इतने में कुएँ के पास कुछ लोग इकट्ठा हो गये और पठान का तमाशा देखने लगे। एक ने पूछा, "पठान, तुम क्या खाते हो?" पठान ने गर्मी से उत्तर दिया, "हम अपना रुपया खाते हैं—रुपया!"

सच भी है अपना पैसा सभी को प्यारा होता है।

हीरा जोशी

—

चाँद!

नभ में अहा! चमकता चाँद!
कैसा ख़ूब दमकता चाँद॥
कैसा अधर लटकता चाँद।
नीचे नहीं टपकता चाँद॥

देखो, कैसा हँसता चाँद।
दुख में कभी न फँसता चाँद॥
सदा घूमता रहता चाँद।
'घूमो तुम भी'—कहता चाँद॥

गेंद-सरीखा गोला चाँद।
बच्चों-का-सा भोला चाँद॥
भड़कदार, चमकीला चाँद।
सुन्दर और सजीला चाँद॥

नभ का सुघर डिठौना चाँद।
सबका बड़ा सलोना चाँद।
परमेश्वर का छौना चाँद॥
जग का अजब खिलौना चाँद॥

सब तारों से न्यारा चाँद।
सब तारों से प्यारा चाँद॥
सब तारों का राजा चाँद।
पास हमारे आ जा चाँद!॥

'स्वर्ण-सहोदर'

—०—

विज्ञान के खेल

भुलुआ बड़ा ही ज़बरदस्त डाकू है; उसके डर से सब लोग काँपते हैं। आज वह गिरफ़ार होगया है, और राजा के विचार से उसे क़त्ल का हुकुम मिला है। क़तलूख़ाँ जल्लाद तलवार हाथ में लिये बग़ल में खड़ा है कि हुकुम पाते ही वह अपना काम तमाम करे।

एकाएक चारों ओर सन्नाटा छा गया। राजमंत्री ने हुकुम दिया, "तलवार मारो, गर्दन ले लो।" साथ ही साथ क़तलूख़ाँ जल्लाद की तेज़ धारदार तलवार चमक उठी। परन्तु यह क्या आश्चर्य ! क़तलूख़ाँ की तलवार तो भुलुआ डाकू की गर्दन पर से दौड़ गई, पर भुलुआ की गर्दन तो न कटी।

सब लोग भौंचका से रह गये। क़तलूख़ाँ जगत्प्रसिद्ध जल्लाद है। उसके लिए किसी की गर्दन लेना बिलकुल एक मामूली सी बात है, पर अब की दफ़ा उसे हार माननी पड़ी। राजमंत्री ने आश्चर्य होकर भुलुआ डाकू से पूछा, "क्यों जी क्या तुमने कुछ जादू-वादू कर दी क्या ?" भुलुआ डाकू सिर हिला कर "नहीं" कहने ही को था कि, क्या ताज्जुब ! ज्योंही उसने सिर हिलाना चाहा, बस त्योंही उसका सिर धम से ज़मीन पर गिर पड़ा। दरबार के सब लोग एक दूसरे का मुँह ताकने लगे।

यह तो ख़ैर एक क़िस्सा ही है, पर सचमुच ऐसी बात का होना सम्भव है। अलबत्ता आदमी का सिर काटने से उसका सिर तो तुरन्त ज़मीन पर गिर पड़ेगा। परन्तु यदि एक बेजान मूर्ति बना कर खड़ी कर दी जाय तो उसका सिर ठीक इसी तरह काटा जा सकता है—यदि ख़ूब फ़ुर्ती के साथ चोट मारी जाय।

संसार की सारी चीज़ों में एक विशेष गुण है। इस गुण के कारण वह चीज़ हमेशा अपनी वर्त्तमान दशा ही में रहेगी या रह सकती है, चाहे वह दशा विश्राम करने की हो अथवा सिर्फ़ हरकत करने की। और इसी दशा में परिवर्तन

उसी समय हो सकता है जब कोई बाहरी शक्ति उस चीज़ के विश्राम की दशा को विचलित करे अथवा हरकत की दशा को हरकत करने से रोक दे। अँगरेज़ी में इस विशेष गुण को 'इनर्शिया' अर्थात् 'जड़त्व' कहते हैं।

नीचे कई परीक्षायें दी जाती हैं। इनकी सहायता से इस गुण का पूरा हाल अच्छी तरह समझ सकोगे। परीक्षायें बड़ी मज़ेदार हैं; तुम चाहो तो उन्हें ख़ुद भी अपने घरों में कर सकते हो।

पहली परीक्षा—

जिल्द बँधी हुई तीन किताबें लो—एक बड़ी, दूसरी मझोली और तीसरी छोटी, और इन्हें एक दूसरे के बग़ल में खड़ी कर दो और उनके ऊपर एक लम्बा काग़ज़ फैला दो, जैसा इस चित्र में दिखाया गया है। अब, ऊपर से एक
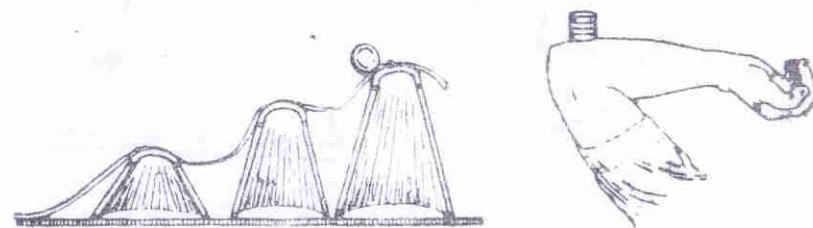
छोटी सी गोली छोड़ दो, तो वह गोली अपने इनर्शिया अर्थात् जड़त्व के गुण से सीधी नीचे चली आवेगी। अपने उसी गुण के कारण वह दो किताबों के बीच की नीची जगह में अटक न जायगी, अर्थात् वहाँ पहुँच कर उसकी गति रुक न जायगी। इस प्रकार उस ऊँचे नीचे रास्ते से भी वह गोली सीधी नीचे को चली आवेगी।

दूसरी परीक्षा—

हाथ की कोहनी पर ३—४ रुपये ऊपर-नीचे सजा कर रक्खो, जैसा चित्र में दिखाया गया है। अब, एकाएक कोहनी को हटा कर झट दूसरे हाथ से उन

रुपयों को थामने की कोशिश करो। यदि इस काम को ख़ूब फ़ुर्त्ती से करो तो रुपयों का थामना कठिन न होगा। रुपयों के गिरने में कुछ समय लगेगा, अर्थात उन रुपयों की इनर्शिया ही के कारण हाथ हटाने की गति रुपयों के गिरने की गति से अधिक तेज़ होगी।

तीसरी परीक्षा—

बाँयें हाथ की एक उँगली पर पतला सा एक छोटा कार्ड रख दो और उसके ऊपर एक रुपया रख दो। अब यदि दहिने हाथ की उँगली से ज़ोर से उस कार्ड पर एक चोट मारो तो वह कार्ड खिसक जायगा, पर रुपया उँगली के
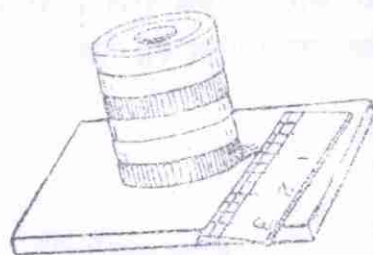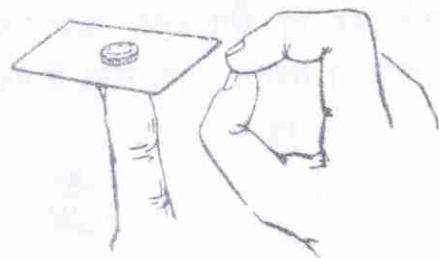
सिरे पर रह जायगा। परन्तु यदि ख़ूब फ़ुर्त्ती से चोट न मारी जाय तो रुपया भी गिर पड़ेगा। रुपये की इनर्शिया ही के कारण वह कार्ड खिसक सकता है।

चौथी परीक्षा—

एक जिल्द बँधी हुई किताब पर ड्राफ़्‌ खेलने की कई गुट्टियाँ ऊपर-नीचे सजा कर रख दो, और एक चपटी पटरी लेकर यदि सबसे नीचेवाली गुट्टी को फ़ुर्ती से चोट मारो तो तुम देखोगे कि नीचेवाली गुट्टी तो खिसक गई है पर बाक़ी गुट्टियाँ ज्यों की त्यों सजी हुई हैं। यह भी ऊपर की गुट्टियों की इनर्शिया के कारण होता है। परन्तु यदि धीरे चोट मारोगे तो ऊपर की गुट्टियाँ भी गिर पड़ेंगी।

पाँचवीं परीक्षा—

इस परीक्षा को यदि बहुत फ़ुर्त्ती से न करो तो ठीक न होगी। दो पतले सूत के फंदे दो छुरियों के फलों पर लटक रहे हैं और उन फंदों में एक मोटी खपच्ची लटका दी गई है। सूत बहुत ही पतला है; छुरी भी बहुत तेज़ है। अब, यदि एक मोटी लकड़ी से उस खपच्ची के ठीक बीचोबीच ज़ोर से और

ख़ूब फ़ुर्ती के साथ एक चोट मारो तो सूत न टूटेगा बल्कि खपची ही टूट कर दो टुकड़े हो जायगी। जिस समय खपच्ची पर चोट लगती है इनर्शिया के कारण ठीक उसी समय छुरी के फलों पर चोट नहीं पहुँचती—इसी से सूत नहीं कटता या टूटता।

इन परीक्षाओं को यदि ठीक रीति से कर सको तो बड़ा मज़ा आवेगा।

श्रीनारायणचन्द्र चैटर्जी

लाला लाजपतराय

कहाँ गये पञ्जाबकेसरी लालाजी तुम आज।
रक्खी थी तुम ही ने अब तक इस भारत की लाज॥
कर दिखलाये थे तुम ने ही बहुत अनोखे काज।
माने गये इसी कारण से भारत के सिरताज॥

राजेश्वरप्रसाद "गुरु"

मास्को की सैर

योरप में बहुत से बड़े बड़े सुन्दर शहर हैं। उन्हीं में एक मास्को भी है। कई बातों में तो मास्को दुनिया के शहरों में निराला है। जैसे हमारे देश में दिल्ली है वैसे ही रूस में मास्को है। रूस के बड़े बड़े राजा लोग यहीं रहते थे। इन राजाओं को ज़ार कहते थे। शुरू में ज़ार लोग सादगी से रहते थे। बाद को वे बड़ी शौकीनी से रहने लगे।

मास्को में बड़े बढ़िया बढ़िया मकान, महल और गिरजे बने हैं। ऐसी इमारतें दुनिया के और किसी शहर में नहीं देखने में आतीं। एक ज़ार ने बड़ा
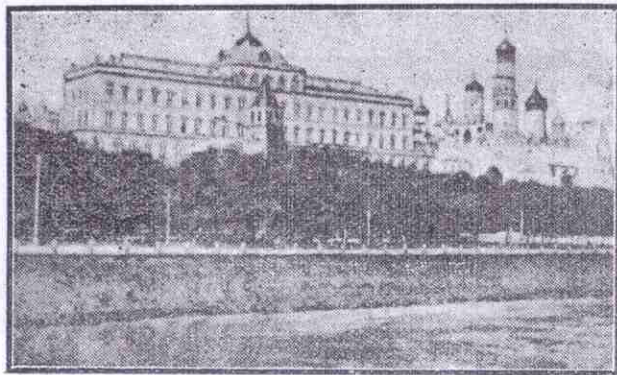
क्रीमलिन—शाही महल

सुन्दर महल बनवाया था। इस महल का नाम क्रीमलिन है। महल के पास एक अजीब गिरजा है। यह गिरजा १८१२ ईसवी में नेपोलियन को हराने की ख़ुशी में बनाया गया था।

महल बहुत बड़ा है। इतना बड़ा कि उसके भीतर एक छोटा सा शहर बसा हुआ है और बड़ी बड़ी सड़कें हैं। महल बड़ा मज़बूत क़िले की तरह बना

है। इसी में बैठकर ज़ार लोग रूस की बादशाहत करते थे। इस महल में इतने बड़े बड़े कमरे बने हैं कि वैसे बड़े कमरे दुनिया की किसी इमारत में नहीं हैं। सेंट जार्ज नाम का एक कमरा है। यह दो सौ फ़ीट लम्बा, सत्तर फ़ीट चौड़ा और साठ फ़ीट ऊँचा है। इसमें सोने के खम्भे लगे हैं और रात को हज़ारों दीपक एक साथ जलते हैं। इस महल में जब ज़ार लोग रहते थे तब इनके सामने से कोई टोपी लगाकर नहीं निकल सकता था। बात यह थी कि ज़ार से सब काँपते रहते थे। अब ज़ार का राज्य नहीं रहा। किसानों और मज़दूरों ने मिलकर ज़ार को मार डाला। अब इस महल में रूस के किसान और मज़दूर बैठकर रूस का राज्य करते हैं।
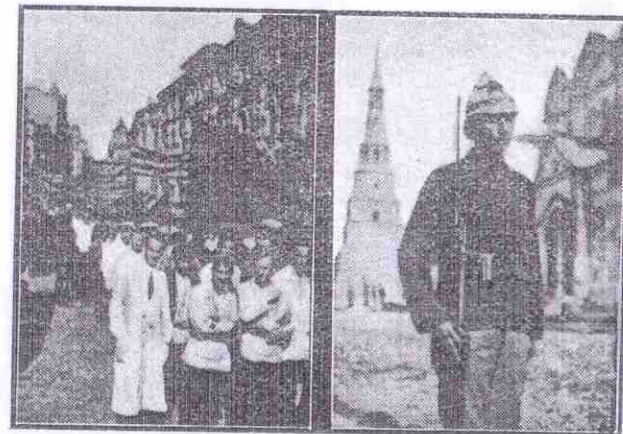
मज़दूरों का जलूस रूसी सिपाही

महल के दूसरी तरफ़ एक सुन्दर स्थान है। उसे रेड स्कायर कहते हैं। यहाँ सेंट बैसिल का गिरजा है। यह गिरजा दुनिया में सबसे सुन्दर है। इसकी कथा यह है कि जब यह बन कर तैयार हुआ तो उस समय के ज़ार ने, जिसका नाम आइवन था, कारीगर से पूछा—'क्या तुम इससे भी अच्छा गिरजा बना सकते हो?' कारीगर ने जवाब दिया—'हाँ बना सकता हूँ।' ज़ार ने कहा—'मैं

तुमको नहीं बनाने दूँगा।' यह कह कर उसने कारीगर की आँखें निकलवा लीं। आइवन बड़ा ज़ालिम ज़ार था। दूसरे कई ज़ार भी बहुत ज़ालिम हुए हैं। शायद इसी लिए तङ्ग आकर किसानों ने ज़ारों का नाश कर दिया।

रेड स्कायर के बीच में लकड़ी की एक काली इमारत है। इसमें लेनिन की लाश एक शीशे के सन्दूक में रक्खी हुई है। लेनिन को मरे कई वर्ष हो गये। परन्तु उसकी लाश इस तरह हिफ़ाज़त के साथ रक्खी हुई है कि देखने से वह अब भी जीवित जान पड़ता है। सैकड़ों लोग यहाँ प्रतिदिन उसके दर्शन को आते हैं। लेनिन बड़े दिमाग़ का आदमी था। रूस के ज़ारों का जिन लोगों
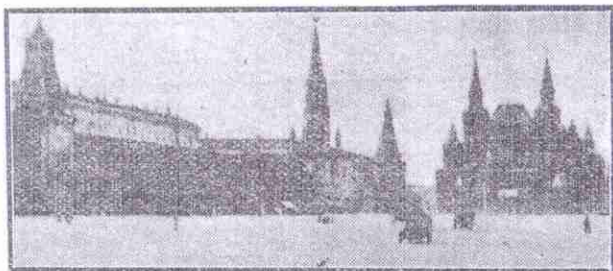
रेड स्क्वायर

ने नाश करके वहाँ किसानों और मज़दूरों का राज्य क़ायम किया है, उनका स[illegible] नेता था। इसी से अब भी लोग देवता की तरह इसका दर्शन करने आते हैं।

रेड स्कायर के फाटक पर एक देवी की मूर्ति है। इसके बारे में पुजा[illegible] लोग कहा करते थे कि इसके दर्शन से रोग दूर हो जाते हैं। परन्तु नई सरकार का इन बातों में विश्वास नहीं है। इसलिए उसने यह लिखकर टँगवा दिया है कि "धर्म अफ़ीमचियों के लिए है।"

घर की लड़ाई में मास्को की जो इमारतें टूट-फूट गई थीं उनकी [illegible] से मरम्मत हो गई है। नये नये मकान बनते जा रहे हैं और सड़कों पर [illegible] और मोटरें दौड़ती दिखाई पड़ती हैं।

रूस में कविता और गीत की आज-कल बड़ी उन्नति हो रही है। मास्को में बड़े अच्छे थियेटर-घर बने हुए हैं। वहाँ के नाटक देखने लायक़ होते हैं। हाँ, मास्को की दूकानें उतनी सुन्दर नहीं मालूम पड़तीं फिर भी नक़्क़ाशी के कामों और पुराने चित्रों आदि की दूकानें देखने लायक़ होती हैं। परन्तु मास्को में भिखारियों और अनाथ बच्चों की संख्या बहुत है। इन्हें देख कर दुःख भी होता है।
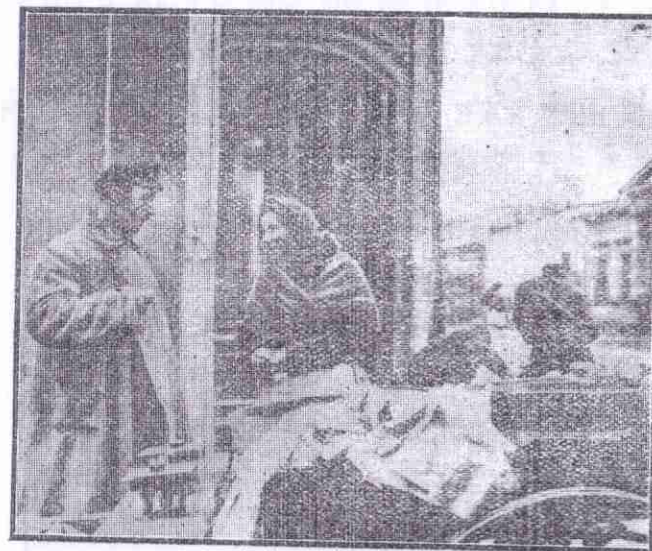
मास्को की एक दूकान

रूसी लोगों में एक बात बड़ी अच्छी है, उनमें शिक्षा की बड़ी रुचि है। अपना जीवन सुधारने के लिए और विद्या प्राप्त करने के लिए वे सदा कठिनाइयों का सामना करने में लगे रहते हैं। मास्को में यदि तुम जाओ तो तुम्हें सैकड़ों ऐसे लड़के लड़कियाँ मिलेंगी जिनके पास खाने को कुछ नहीं है फिर भी वे जी-जान से विद्या सीखने में लगे हुए हैं। इसके लिए वे सारे कष्ट झेलने को तैयार रहते हैं।

——

लक्ष्मीकान्त वर्मा

मेरी माता

मैं इक नन्हाँ सा बच्चा था, अंग अंग का तब कच्चा था।
मातृ-प्रेम पाया सच्चा था, मुझे कहा तूने अच्छा था॥
तेरा चुम्बन मुझको भाता।
मेरी माता, मेरी माता॥ १॥
दूध पिलाकर मुझे जिलाया, अपनी गोदी मुझे खिलाया।
हिन्डोले में मुझे झुलाया, नरम सेज में मुझे सुलाया॥
तेरी मिहनत से सुख पाता।
मेरी माता, मेरी माता॥ २॥
रोना सुन कर तू उठ आती, थपकी देकर मुझे सुलाती।
मेरे दुख में अति अकुलाती, मेरे हँसने पर सुख पाती॥
तेरा अद्भुत प्रेम सुहाता।
मेरी माता, मेरी माता॥ ३॥
सुन्दर भोजन मुझे खिलाया, अपने हाथों जिसे बनाया।
दुख सहकर सुख मुझे दिलाया, वही किया जो मुझको भाया।
मुझमें तेरा सा गुण आता।
मेरी माता, मेरी माता॥ ४॥
अच्छा कपड़ा मुझे दिया है, जिसको तूने स्वयं सिया है।
खेल खिलौना जमा किया है, "बाल-सखा" भी मँगा लिया है॥
जो चाहूँ सो मैं सब पाता।
मेरी माता, मेरी माता॥ ५॥
पाल-पोस अब बड़ा किया है, दो पाँवों पर खड़ा किया है।
दिल को तूने कड़ा किया है, बल भी सारा लड़ा दिया है॥
धन्य धन्य है तेरा नाता।
मेरी माता, मेरी माता॥ ६॥
तेरा प्रेम कहाँ तक गाऊँ, वर्णन करते मैं थक जाऊँ।
तेरी आज्ञा जो अब पाऊँ, चरन-कमल में शीश नवाऊँ॥

सारा जग तेरा गुण गाता।
मेरी माता, मेरी माता॥ ७॥
तेरे हित मैं रक्त बहाता, तन मन धन तुझ पर चढ़वाता।
तेरे भी मैं चरण दबाता, जब मैं अपना धर्म निभाता॥
तब मैं तेरा पूत कहाता।
मेरी माता, मेरी माता॥ ८॥

हीरा जोशी

चूहा

है यह चूहा बड़ा हँसोड़ा॥
कभी हाथ नहि मेरे आवे,
बन्दा पीछे उसके धावे,
जहाँ रखूँ तहाँ घूम घूम कर,
काटे मेरा कोड़ा॥
अगर पलँग पर सोता हूँ मैं,
ख़ूब ख़र्राटे लेता हूँ मैं,
तब यह चढ़कर छप्पर पर से,
उपर गिरावे रोड़ा॥
झाँक झाँक के देख देख के,
रिझा रिझा के पेख पेख के,
ऐसा दौड़े बिल को सरपट
जैसे दौड़े घोड़ा॥

"गौरीशङ्कर श्रीवास्तव 'मग्न'

बच्चों का कमरा

[यहां पर 'बाल-सखा' के छोटे छोटे पाठकों के कहानियां, कविताएँ और चुटकुले प्रतिमास छपा करेंगे—सं०]

१—कष्ट

कष्ट से सब-कुछ मिलै ।
बिना कष्ट सुख होता नहीं ॥
समुद्र में कूदे बिना ।
मोती कभी मिलता नहीं ॥

श्रीरंजन, बनारस

२—सभा की बातें

कहीं एक सभा हो रही थी । उसमें एक महाशयजी ने अपने व्याख्यान में मिसाल के तौर पर यह दोहा कहा—

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब ।
अवसर बीता जात है, बहुरि करोगे कब ॥

इसके जवाब में एक महाशय बोल पड़े—

आज करे सो काल कर, काल करे सो परसों ।
जल्दी जल्दी क्या करता है, अभी है जीना बरसों ॥

इस जवाब को सुनकर सब सभा खिलखिला कर हँस पड़ी ।

प्राणनाथ पाठक

३—केवट

केवट कहो कहाँ जाते हो,
सारे लोग लिये जाते हो ।
खेते हो सबके हित नैया,
धन्य धन्य तुम केवट भैया ॥
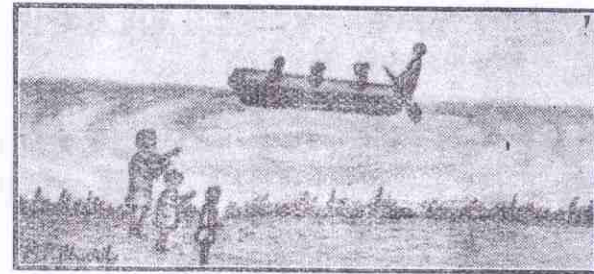
हम भी केवट कभी बनेंगे,
भारत की नैया खेवेंगे ।
कर देंगे सब लोग सुखारी,
यही प्रतिज्ञा हमने धारी ॥

रघुनाथ भारती

४—संतजी और पण्डितजी

एक संतजी एक पण्डितजी के द्वार पर भिक्षा माँगने आये। पण्डितजी ने कहा—'कहो सन्तजी, कुछ पढ़े लिखे हो ?' सन्तजी ने कहा—'अरे बच्चे, पठितव्यं तदपि मर्तव्यं, न ·पठितव्यं, तदपि मर्तव्यं, फिर दन्त कटाकटेति किं कर्तव्यम् ?'

तब पण्डितजी ने कहा—यदि यही माना जाय तो 'खातव्यं तदपि मर्तव्यं, न खातव्यं तदपि मर्तव्यं, फिर अत्र भसाभसेति किं कर्तव्यम् ?' सन्तजी क्रोधित होकर चल दिये।

गीगराज जोशी, सीकर

५—राम और श्याम

राम—भाई श्याम ! मैंने तुम्हें कल हज़ारों गालियाँ दीं सो क्षमा करो !

श्याम—तुमने मेरा कुछ बिगाड़ा नहीं, क्षमा क्या करूँ ?

राम—मैंने तुम्हें सहस्रों गालियाँ दीं, और कुछ बिगाड़ा ही नहीं।

श्याम—अगर, तुम मेरे घर दस रुपये ले आओ और मैं न लूँ तो तुम क्या करोगे ?

राम—लेता जाऊँगा।

श्याम—उसी प्रकार तुमने मुझे गालियाँ दीं। मैंने वे नहीं लीं। तुम लेते गये, मेरा कुछ न बिगड़ा।

कृष्णदेवप्रसाद कक्षा ७, डालटेनगंज

६—वीरबल की चालाकी

वीरबल के मा-बाप बहुत ही ग़रीब थे। उनका घर एक पहाड़ी के नीचे था। वीरबल बचपन ही से हँसमुख, बुद्धिमान् तथा बातचीत करने में चतुर था। एक दिन जलाने के लिए लकड़ी नहीं थी। बालक वीरबल को मालूम होने भर की देर थी। उसने कुल्हाड़ी उठा कर कंधे पर रक्खी और मस्ती से गाता हुआ, पहाड़ी पर चढ़ गया। लकड़ी तो काट चुका—पर बाँधे किससे ! वीरबल ने पहाड़ी पर से ही पुकारा—"मा ! ज़रा रस्सी किसी के हाथ भेज दो। मैं

नीचे ही भूल आया हूँ।" वीरबल की मा ने कहा—"किसके हाथ भेजूँ ? यहाँ तो कोई आदमी नहीं है।"

वीरबल ने कहा—"मेरे कुत्ते के गले में लपेट दो।" वीरबल की मा ने कुत्ते के गले में रस्सी लपेट दी। वीरबल ने ऊपर से चुचकारी देकर उसे पुकारा। कुत्ता स्वामी की आवाज़ सुन कर दौड़ता हुआ पहाड़ी पर चढ़ गया। वीरबल रस्सी पाकर उसी से लकड़ी बाँध, नीचे उतरने लगा।

संयोगवश अकबर बादशाह भी, उसी पहाड़ी पर शिकार खेलने आये हुए थे। पड़ाव उसी पहाड़ी के नीचे था। वे खड़े खड़े वीरबल की चालाकी देख रहे थे। उन्होंने उसे अपने पास बुलाया। रास्ते में एक नाला पड़ता था। वीरबल उसे लाँघता हुआ, बादशाह के समीप पहुँचा। उन्होंने वीरबल की पीठ पर हाथ फेरा तथा कुछ पुरस्कार दिया। वीरबल जब घर की ओर लौटा, तब नाला पार करने में हिचकिचाने लगा।

बादशाह ने पूछा—"आने के समय तो बेखटके लाँघकर तड़पते हुए गये थे। अब हिचकिचाते क्यों हो वीरबल !" वीरबल ने कहा—"आने के समय मैं बहुत ही हलका था। अब आपने मेरी पीठ पर हाथ फेर दिया है इसलिए मैं भारी हो गया हूँ। अकबर ने सोचा—"यह बालक बुद्धिमान् ही नहीं, बातचीत करने में भी चतुर है।" उसी दिन से बादशाह ने वीरबल के माता-पिता से पूछ कर, उसे अपने साथ रख लिया। वीरबल के दिन फिरे।

दुर्गाप्रसाद नन्दे 'मुकुल'

मियाँ जी की दया

एक मियाँजी थे अति मोटे।
जितने मोटे उतने छोटे ॥
यानी बिलकुल गोले थे वे।
किन्तु बहुत ही भोले थे वे ॥

मेहनत से अति डरते थे वे।
काम बहुत कम करते थे वे ॥
हुक्का पीते मौज उड़ाते।
पैदल कहीं न आते जाते ॥

एक उन्होंने पाला गदहा।
था वह बड़ा निराला गदहा ॥
उनकी वह चीज़ें ले जाता।
काम बहुत वह उनके आता ॥

खेल खिलौने लाद गधे पर।
जाते वे बाज़ार निरन्तर ॥
लड़कों को ललचाया करते।
पैसा ख़ूब कमाया करते ॥

एक रोज़ जब गदहा लादा।
बोझ बहुत था उस पर ज़्यादा॥
बोझे को गदहे को देखा।
फिर अपने मन में यों लेखा—

कभी न बोझा इतना सारा।
ले जा सकता यह बेचारा ॥
जीवों पर जो दया न लाते।
बड़े लोग वे नहीं कहाते ॥

इस पर दया दिखाऊँगा मैं।
इसका बोझ उठाऊँगा मैं ॥

यों कह बोझा बाँध पीठ पर।
आप चढ़े गदहे के ऊपर ॥
प्यारे बच्चो! बस क्या था फिर।
लिये मियाँ को गधा गया गिर ॥
और गिरा वह बोझा भारी।
हिम्मत गई मियाँ की मारी ॥
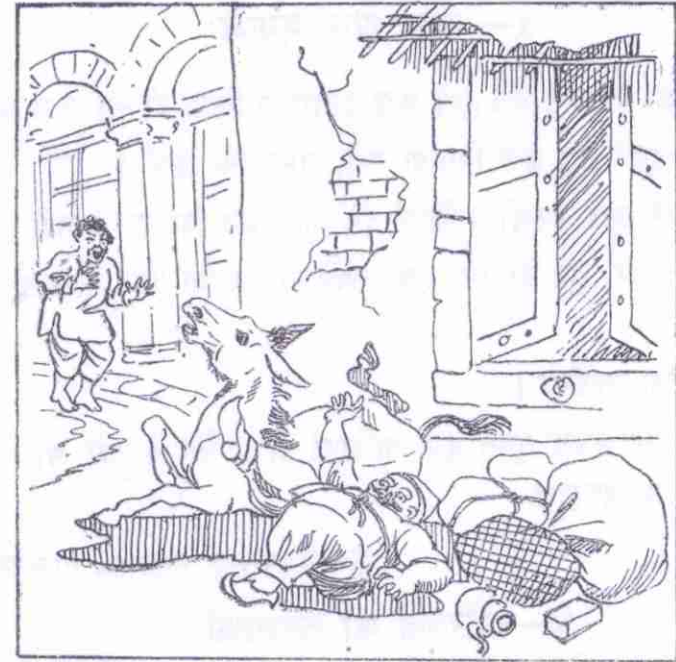
बोले—"कभी न गिरता था मैं॥
इस पर चढ़ नित फिरता था मैं॥
पर अब देगा साथ न मेरा।
इसे बुढ़ापे ने आ घेरा ॥

———

नन्हीं संगचू

संगचू छोटी सी चीनी लड़की है। पर वह रहती इलाहाबाद के एक मुहल्ले में है। वह बड़ी प्यारी मालूम पड़ती है। बिलकुल गोल-मटोल गेंद की तरह है। जब देखो तब खिलखिलाती मिलेगी। उसके बाल काले और कड़े हैं, बहुत पतली सींकों की तरह सीधे खड़े रहते हैं। उसकी आँखें भी काली हैं। जब वह हँसती है, तो वे बिलकुल छिप जाती हैं और वह हँसती भी अक्सर ही है। उसकी नाक चौड़ी और चपटी है। उसका मुँह बड़ा भोला-भाला छोटा सा है। आप संगचू को देखें, तो लड़का ही समझेंगे। क्योंकि वह बड़े मज़े का छोटा सा कसा हुआ पाजामा और एक काला कोट पहनती है। कलाई में, गुदगुदे हाथों के ऊपर, वह चाँदी के कड़े पहने है।

संगचू को जब कोई ऊपर उछालता है, या थपथपाता है तो वह बहुत ख़ुश होती है। वह यहीं पैदा हुई थी, इसलिए उसकी मा उसे 'इलाहाबादी लड़की' कहती है। लेकिन है वह बिलकुल चीनी बच्चों की तरह। उसकी मा जब अपने देश की पोशाक पहनती है तो हम लोगों के लिए एक तमाशा हो जाती है। उसके जूते इतने छोटे हैं, जैसे छः बरस के बच्चे पहनते हैं। क्योंकि चीनी लोग बचपन

से ही औरतों के पैर बाँध देते हैं। संगचू की मा के पैर भी बाँध दिये गये थे। वह पञ्जों के बल चलती है।

उसके एक लड़का भी है। उसका नाम है संगयेन। चीनी लोग पिता का नाम अपने नाम से पहले रखते हैं। जैसे संगचू, और संगयेन के पिता का नाम संग है। संगयेन अपने बाप की तरह हिन्दुस्तानी पोशाक पहनता है। चीनी औरतें घर में बहुत कम रहती हैं। यहाँ वे काग़ज़ के खिलौने बनाती हैं और उन्हें बाज़ार में ले जाकर बेचती हैं। औरतों से अधिक आदमी गृहस्थी का काम करते हैं। वे ही खाना पकाते हैं। वेही कपड़े धोते हैं। वे औरतों के साथ कभी नहीं खाते। मा और बच्चे जब उनकी मर्ज़ी होती तब खाते हैं। आदमी ख़ुद ही पकाते और जब दिल होता तब खाते हैं। वे दिन में दो बार खाते हैं, एक चार बजे एक दस बजे। अगर तुम चीनियों से बातें करो और उनका हिन्दी बोलना सुनो तो तुम्हें बिना हँसी आये न रहेगी।

शम्भूदयाल सक्सेना, साहित्यरत्न

स्वर्गीय विद्यावती

विद्यावती का जन्म माघ बदी १० संवत् १९६५ में हुआ था। वह हिन्दी के पुराने लेखक पंडित लक्ष्मीधर वाजपेयी की सबसे बड़ी लड़की थी। वह स्वर्ग की देवी की तरह इस पृथ्वी पर उतरी थी। १० मास की होने पर ही वह साफ़ साफ़ बोलने और पैरों के बल चलने लगी थी। ढाई वर्ष की आयु में वह अक्षर पहचानने लगी थी और चार वर्ष की होते होते वह 'बाला-बोधिनी' आदि पुस्तकें पढ़ने लगी थी।

स्वर्गीय विद्यादेवी

१२ वर्ष की उम्र में वह प्रयाग के क्रास्थवेट स्कूल में पढ़ ही रही थी कि असहयोग आन्दोलन शुरू हुआ, माता-पिता के संस्कारों का विद्यावती पर अच्छा प्रभाव पड़ चुका था। देश की पुकार पर विद्यावती ने भी स्कूल छोड़ दिया। अपनी माता के साथ चर्खा कातना, चन्दा इकट्ठा करना और अशिक्षित स्त्रियों के पढ़ाने का काम शुरू कर दिया। १४ वर्ष की आयु में विद्या के पिता ने उसका विवाह कर दिया। अब तक विद्या लड़कों की भाँति रहती थी जो जी में आता था करती थी, जहाँ चाहती थी जाती थी, अब उसे मालूम हुआ कि वह लड़की है। उसे बन्द होकर एक कोठरी में बैठना पड़ेगा। परन्तु उसे अधिक दिन बन्धन में न रहना पड़ा। बेचारी विवाह के तीन ही वर्ष बाद स्वर्ग सिधार गई। इसमें तो ज़रा भी सन्देह नहीं कि यदि

वह जीती रहती और उसे अपने विचारों के अनुसार काम करने का मौक़ा मिलता तो वह भारत के स्त्री-रत्नों में एक होती।

विद्यावती बहुत सुशील, हँसमुख और मिलनसार लड़की थी। जो कोई भी उससे एक बार मिल लेता, उसके गुणों के कारण उसकी ओर खिँच जाता था। उसकी बात का असर जादू की तरह होता था। कितनी ही स्त्रियों को उसने पढ़ना और चर्खा कातना सिखा दिया जो आज भी उसकी याद में आँसू बहाती हैं। वह सहनशील तो इतनी थी कि दुख से कभी घबड़ाती ही न थी। माता-पिता के पढ़ने-लिखने तथा घर के तमाम कामों में पूरी मदद पहुँचाती थी।

वह थी छोटी ही पर देश-भक्ति उसकी अपूर्व थी। हमेशा ही मोटा खद्दर का कपड़ा पहनती थी। गहनों से अरुचि थी। तिलक-स्वराज्य-फंड में बहुत सा रुपया चन्दा करके दिया था। भगवान् तिलक, महात्मा गाँधी, सरोजिनी नायडू आदि देश के सभी बड़े बड़े नेताओं के व्याख्यान उसने सुने थे और उनके प्रति बड़ी श्रद्धा रखती थी। एक बार बंबई में महात्माजी ने रुपये की अपील की! विद्यावती भी वहाँ मौजूद थी। अपने पिता से बोली—"दादा! मैं भी चन्दा दूँगी। पिता ने रुपया दिया जिसने बड़ी प्रसन्नता से दान दिया, उसका ऐसा प्रेम-पूर्ण दान देखकर सब लोग चकित रह गये।

विद्यावती की बुद्धि बड़ी तेज़ थी। जिस बात को एक बार सुनती, याद कर लेती थी, गणित उसका प्यारा विषय था। स्कूल के ६ ठे ७ वें दर्जे के लड़के आकर उससे सवाल पूछा करते थे। पुस्तकें पढ़ने का उसे बेहद शौक़ था। समय मिलने पर एकान्त में हमेशा वह पुस्तक पढ़ती ही पाई जाती थी, गर्मी की कठिन दोपहरियों में भी वह सोना छोड़कर पुस्तकें ही पढ़ा करती थी।

उसे लेक्चर देना नहीं आता था पर अपने हर एक काम से वह सदा सबको उपदेश देती रहती थी। निस्संदेह, ऐसी बालिका का यह छोटा-सा जीवन भी बड़ों बड़ों के लिए बहुत शिक्षाएँ देता है।

विद्याभास्कर शुक्ल
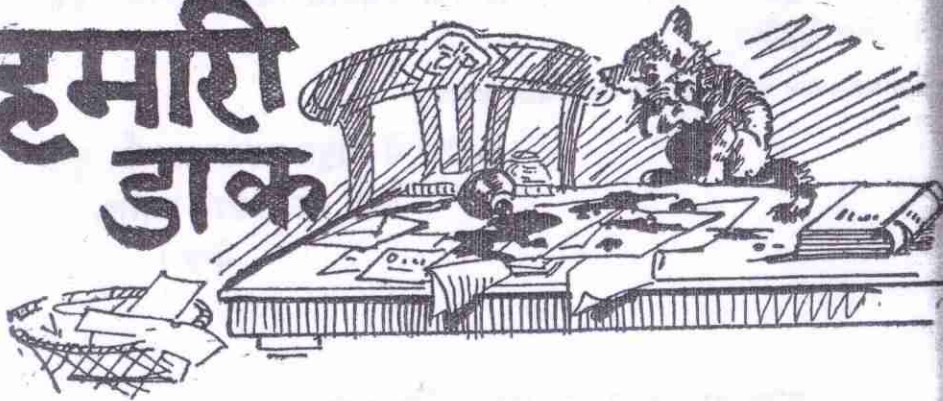
हमारे छोटे दोस्तो !

इस महीने में हम तुम लोगों की चिट्ठियाँ नहीं छाप सकेंगे। बात यह है कि हमें स्वयं तुमसे कुछ मज़े की बातें कहनी हैं। अब तक तुम लोग जो चिट्ठियाँ भेजते रहे हो उनसे हमें चार बातें मालूम हुई हैं। पहली बात तो यह है कि हमने मालूम किया है कि हमारे देश के बालक बड़े सच्चे हैं। यानी तुम सब बड़े सच्चे हो। पहेलियों के जवाब में हमने देखा है कि तुममें से बहुतों ने अपनी समझ से ही जवाब लिखे हैं। बहुत से लड़के चाहते तो झूठ बोलकर इनाम ले सकते थे, पर किसी ने ऐसा नहीं किया। घड़ीवाले इनाम में यह क़ैद थी कि जिसकी उम्र १० वर्ष से अधिक होगी उसे इनाम नहीं मिलेगा। इसलिए दस वर्ष से अधिक आयुवाले बालक बालिकाओं ने साफ़ लिख दिया था कि हमारी आयु अधिक है इसलिए हम इस प्रश्न का जवाब न देंगे। गत मास के चौथे प्रश्न के उत्तर में भी किसी ने बनावटी सपना नहीं लिखा। कुछ लोगों ने जवाब लिखने में शैतानी ज़रूर की है। पर उसे हम झूठ बोलना नहीं कह सकते। तुम लोगों की सचाई से हम बहुत .खुश हैं।

दूसरी बात यह है कि हमारे देश के बालकों को उचित सलाह दी जाय तो वे उसे फ़ौरन मान लेते हैं। कई महीने से हम कह रहे थे कि पहेलियों के जवाब तुम लोग बना कर नहीं लिखते। पर इस महीने में हमारे पास तुम लोगों की जितनी चिट्ठियाँ आईं, सब साफ़ और सुन्दर लिखी थीं। इस बात से भी हम बहुत .खुश हैं और हमें आशा है कि तुम लोग हमेशा इसी तरह बनाकर लिखोगे।

तीसरी और चौथी बात हमें यह मालूम हुई है कि बाल-सखा से तुम लोगों की दो शिकायतें हैं। एक तो तुम लोगों के लेख नहीं छपते दूसरे तुममें से बहुतों को इनाम नहीं मिलता। तुम्हें यह जानकर खुशी होगी कि तुम्हारी इन दोनों शिकायतों को भी दूर करने का हमने इन्तज़ाम कर दिया है। इसी महीने से हमने 'बालकों का कमरा' खोल दिया है। उसमें तुम सब लोगों के लेख छपा करेंगे। अब रही बात इनाम की। सो दूसरे महीने से यानी दिसम्बर से कम से कम **पचास इनाम प्रतिमास** दिये जाया करेंगे। कोशिश करोगे तो तुम सब इन इनामों को पा सकोगे। ये इनाम पुस्तकों के रूप में दिये जायँगे। इसके नियम आदि सब तुम्हें दिसम्बर के अङ्क में मालूम हो जायँगे। जो बाल-सखा के ग्राहक नहीं हैं वे कम से कम दिसम्बर का अङ्क मँगाकर सब बातें जान लें। आशा है यह समाचार सुनकर तुम सब लोग बहुत .खुश होगे। इति।

तुम्हारा
सम्पादक
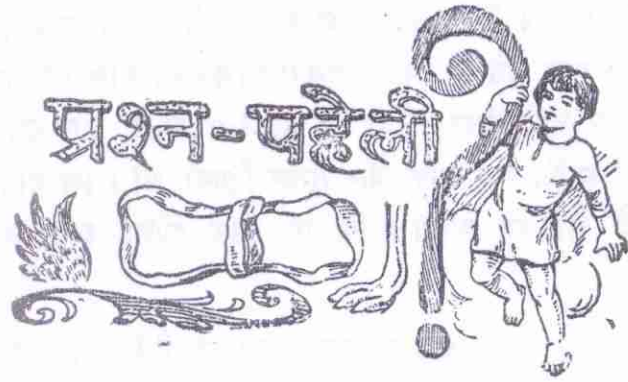
'लाला लाजपतराय-स्मारक' पारितोषिक

१२) इनाम

नीचे लिखे प्रश्नों का जल्द और ठीक उत्तर देनेवाले को १२) इनाम दिये जायँगे और उनके उत्तर अगले मास में छापे जावेंगे। चौथे और पांचवें प्रश्न का उत्तर अलग अलग कागज़ पर लिखना चाहिए।

१—सबसे तेज़ क्या दौड़ता है?

२—सबसे बड़ा क्या है?

३—वह कौन सी रक़म है जिसमें से उसका आधा घटायें तो उसका दूना हो जाय।

४—तुम्हें तीन गन्ने के टुकड़े दिये हुए हैं। उन्हें इस प्रकार रक्खो कि तीन चोटों में जो कि एक तेज़ तलवार से लगाई जावेंगी उनके नौ टुकड़े हो जायँ और हर एक चोट अधिक से अधिक दो गन्नों पर पड़े!

५—अगर ईश्वर तुम्हें एक चिड़िया बनाये तो तुम कौन सी चिड़िया बनना पसन्द करोगे और क्यों?

६—तुमने लालाजी के मरने का क्यों अफ़सोस किया! उनका एक जीवन-चरित्र लिखो।

नोटः—इन सबके उत्तर इस पते से भेजने चाहिए।

सेवा में श्रीयुत सत्यप्रकाश जी गुप्त
लाल कुरती, छोटा बाज़ार,
मेरठ।

आक्टोबर सन् १९२८ की पहेलियों के उत्तर

१—बिजली का पङ्खा, (२) कमल, (३) बनारस, (४) उत्तर आगामी अङ्क में छपेंगे।

इनाम पानेवालों के नाम—(१) तारादेवी, जलन्धर, (२) शम्भूप्रसाद विद्यार्थी, महाराजगञ्ज।

नीचे लिखे बालक-बालिकाओं की हम प्रशंसा करते हैं। क्योंकि इन्होंने बड़ी सफ़ाई और सावधानी से अपने उत्तर भेजे थे।

किशोरीलाल गुप्त, कानपुर। सुशीलकुमारी, हिसार। रामगोपाल पाण्डेय, पथरौड़ा। सुरेन्द्रकुमार जैन, जयपुर। कृष्णबलदेवसहाय, गोंडा। विन्ध्येश्वरप्रसाद सादु, हांसाडीह। महाबीरप्रसाद नेवटिया, फ़तेहपुर। वसन्तनारायण लघाटे, धमतरी। हेमलता, आगरा। अब्दुल-रहमान, पुष्कर। वंशीधर शर्मा, बीकानेर। परदेशीराम रायपुर। चन्द्रदेवप्रसाद शर्मा, हवेली। पूरनलाल पाण्डेय, जबलपूर। राधारमन, आगरा। निरङ्कारसिंह, एटा। सतीशचन्द्र गुप्त, लूकर-गञ्ज। अन्नपूर्णा देवी, छपरा। शान्तिदेवी, अलवर। कैलाशचन्द्र भार्गव, बांदा। हनुमानप्रसाद दागा, बम्बई। कृष्णचन्द्र, गोंडा। भृगुदत्त तिवारी, लखनऊ। जार्जमसीह, जबलपुर। कालीचरण डालमिश्रा, कानपुर। शारदादेवी भार्गव, लखनऊ। जयकृष्णदास, इटावा। तेजनारा-यण, तनखा, बनारस। जयदेवी, मथुरा। निर्मला जोशी, भरतपूर। अवधविहारीप्रसाद गुप्त, सहँतवार। रामगोविन्दप्रसाद, सहँतवारा। लाजपतराय, लाहौर। शान्तिदेवी, अम्बाला। कुमारसिंह, बैतूल। सुखदयाल दादू, नारनौल। लाल सत्येन्द्रसिंह, रीवाँ। चन्द्रशेखर पाँड़े, काशी। किशोरशरण भटनागर, जबलपुर। शान्तिस्वरूप गुप्त, बड़नगर। कमलादेवी थापन, लखनऊ। नरेन्द्रकुमार, बेलगाम। अब्दुलसलीम, दारागञ्ज। माधवप्रसाद बिड़ला, राँची। वसन्त-

कुमार बिड़ला, रांची। नागमती देवी, लहुँआ। सुमतिदेवी, देहरादून। गिरधरगोपाल, बरेली। सौभाग्यसिंह पञ्चौली, छोटी सादड़ी। तारावती, आलावलपुर। गुलाममहम्मद, रायपुर। शकुन्तलादेवी, खेतड़ी। प्रेमचन्द शुक्ल, जबलपुर। कृष्णकुमार बिरला, राँची। माधव वामन खानखोजे। राजेन्द्रसिंह, बनारस। पवित्रादेवी, कपूर्थला। म० ह० नरगुंदकर, खैरागढ़।

घड़ीवाला इनाम

श्रीयुत श्रीशचन्द्र पोद्दार (कलकत्ता) ने अपने सितम्बर मास में छपाये प्रश्न के अनुसार श्रीयुत आनन्द वासुदेव ओती, (निवास-मंडल) को घड़ी इनाम दी है और निम्नलिखित उत्तर-प्रेषकों की प्रशंसा की है—

श्रीदेवी, बनारस। विश्वनाथसिंह, खजरो। नारायणी बाई, रायपुर। विपिनचन्द पन्त पौड़ी। सुशीलादेवी, मुरादाबाद। कृष्णमूर्ति, नागपुर। सरस्वती, दलसिंह सराय। मदनलाल, बनारस। कालीप्रसन्न दीक्षित, कानपुर। देवनन्दनसिंह देवघर। सिद्धेश्वरप्रसादसिंह, पटना। शकुन्तला देवी, बांदा। जगदीशचन्द्रसिंघल, अलीगढ़। निरङ्कारशरण माथुर, गोरखपुर। श्यामादेवी रतसंड़, बलिया। इन्द्रदेव सराफ़, दरभङ्गा। संतप्रकाश दानाओली, लश्कर। नागमती देवी लहुआ, ज़ि० आज़मगढ़। कल्याणमल टोंग्या, हाटपीपल्या। सावित्री देवी, छपरा। कुसुम-बाई कन्नौज। रणवीरविहारी सेठ, लखनऊ। यादवेन्द्रदत्त दुबे, जौनपुर। माधवराव सांवला-पुरकर, हुसङ्गाबाद। विपिनचन्द्र जोशी, प्रयाग।

Printed and published by K. Mittra, at The Indian Press, Allahabad.